दीपावली, 20 अक्टूबर 2025, सोमवार

(सभी गणना गाजियाबाद शहर अनुसार)

तिथि : चतुर्दशी 15:44 तक तत्पश्चात अमावस्या
नक्षत्र : हस्त 20:17 तक तत्पश्चात चित्रा
योग : वैधृति
सूर्य राशि : तुला
चन्द्र राशि : कन्या
प्रदोषकाल : 17:45 से 20:17 तक
वृषभ लग्न : 19:07 से 21:02 तक
निशिताकाल : 23:40 से 24:30 तक
सिंह लग्न : 25:37 से 27:55 तक

पूजा का मुहूर्त

सामान्य गृहस्थ लोगों के लिए: 19:07 से 20:17 तक (प्रदोष काल, वृषभ स्थिर लग्न युक्त)
लक्ष्मी पूजन विशेष आगम पद्धति से करते/कराते हैं: 23:40 से 24:30 (निशिता काल)

पाँच दिवसीय दीपावली महापर्व का तीसरा दिन कार्तिक अमावस्या है। लक्ष्मी तन्त्र के अनुसार जगत की प्रत्यक्ष त्रिशक्ति है सूर्य-चन्द्र-अग्नि। रात्रि में सूर्य-ज्योति नहीं रहती। अमावस्या के कारण इस दिन रात्रि में तीसरी ज्योति चन्द्र-ज्योति भी नहीं रहती। अतः त्रिशक्ति में तीसरी प्रत्यक्ष शक्ति अग्नि-ज्योति की पूजा होना परम आवश्यक हो जाता है। पद्मपुराण के अनुसार कार्तिक में विशेषतः दीपावली को दीपक ज्योति में महालक्ष्मी का वास है **"सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपज्योतिः स्थिता तु या"** अतः आज सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाली मूल ज्योति महालक्ष्मी की आराधना होती है। महालक्ष्मी की आराधना के लिए भगवान् गणेश, महाकाली, महासरस्वती की आराधना आवश्यक है, अतः रात्रि में उनकी पूजा अर्चना भी की जाती है। श्रीमहाकाली-श्रीमहालक्ष्मी-श्रीमहासरस्वती ही त्रिज्योति स्वरूपा श्रीसिद्ध लक्ष्मी हैं।

शास्त्रों ने इस कार्तिक अमावस्या रात्रि को सुखरात्रि की संज्ञा दी है। ब्रह्मपुराण के अनुसार कार्तिक की अमावास्या को अर्धरात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सदगृहस्थों के मकानों मे जहाँ - तहाँ विचरण करती हैं। इसलिये अपने मकानों को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली अथवा दीपमालिका बनाने से लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और उनमें स्थायी रुप से निवास करती है। स्कंदपुराण के अनुसार कार्तिक मास की रात्रि (विशेषतः अमावस्या) जब आकाश साफ और असंख्य तारों से चमकीला होता है, रात में लक्ष्मी गृहस्थ का कौतुक देखने आती हैं। समुद्र में जन्मी देवी लक्ष्मी जहां भी दीपक देखती हैं, वह बहुत प्रसन्न होती हैं और वहीँ निवास करती हैं, जबकि जहाँ अन्धकार होता है उस स्थान को त्याग देती हैं। अत: कार्तिक मास में दीपों को सदैव (प्रमुख रूप से) लगाना चाहिए। इस कारण भी आज के दिन दीपमालिका और लक्ष्मी पूजन का अतिविशेष महत्त्व है।

दीपावाली के दिन प्रातः काल

- प्रात:काल उठ कर सबसे पहले किसी जरूरत मंद को गेंहू दान करो।
- शरीर पर तेल की मालिश करके जल में गंगाजल मिलाकर स्नान करें।
- स्नान करके मेन दरवाजे पर हल्दी से अनामिका ऊँगली से स्वास्तिक बनायें।
- पति-पत्नी सुबह लक्ष्मी नारायण मंदिर में एक साथ जाएं और वहां लक्ष्मी को वस्त्र चढ़ाएं, धन की कमी नहीं रहेगी। अगर वस्त्र रेशमी हो तो उससे उत्तम तो कुछ हो ही नहीं सकता।
- दीपावली को प्रातःकाल हनुमान की पूजा का विधान है। हनुमान की नई मिटटी की मूर्ती लाकर उनको आसन पर विराजित करके उनकी विधिवत पूजा करें। हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, संकटमोचन का पाठ करें। चूरमा का भोग लगाएं। अष्टोतर शतनामावली का पाठ करें। उनकी आरती उतारें और प्रसाद वितरित करें।

सजावट

- मुख्य द्वार पर ॐ, मंगल कलश , मछली का जोड़ा, स्वस्तिक अवश्य स्थापित करना चाहिए।
- रंगोली: लक्ष्मी पूजन के स्थान, प्रवेश द्वार तथा आंगन में धार्मिक चिह्न, ॐ, कमल, स्वास्तिक, कलश, मोर, फूल पत्ती आदि अंकित कर रंगोली बनाई जाती है। कहते हैं कि लक्ष्मीजी रंगोली की ओर जल्दी आकर्षित होती है। दीपावली के दिन उत्तर दिशा में रंगोली बनाना और भी ज्यादा शुभ माना गया है।
- वंदनवार: आम या अशोक के नए कोमल पत्तों की माला को वंदनवार कहा जाता है। इसे दीपावली के दिन द्वार पर बांधा जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि देवगण इन पत्तों की भीनी-भीनी सुगंध से आकर्षित होकर घर में प्रवेश करते हैं। ऐसी मान्यता है कि दीपावली की वंदनवार पूरे 31 दिनों तक बंधी रखने से घर-परिवार में एकता व शांति बनी रहती हैं।
- माँ लक्ष्मी के अन्दर आते पैरों के निशान लाल रंग से जरूर बनाएं।
- घर में पौछा लगाते समय साबुत नमक मिला कर पोंछा लगाएं।
- घर के डायनिंग हॉल में कांच के बाउल में पानी भर कर उसमें विभिन्न प्रकार के फूल रखें।
- घर की सजावट में सफ़ेद, पीले और लाल फूलों का उपयोग करें।
- घर के मुख्य द्वार के दोनों और पत्थर या धातु के २ हाथी रखने से सुख समृधि आती है।
- स्वर्गीय परिजनों के चित्र जो दक्षिण की दीवार पर लगे हैं उसकी आज के पूजा करने से सुख समृधि बढेगी। उनको चन्दन का तिलक लगायें, नयी माला पहनाएं, खील, बताशे, मिष्ठान्न अर्पित करें। चाँदी या पीतल के दीपक में घी का दीपक जलाएं।
- उत्तर दिशा लक्ष्मी तथा कुबेर की दिशा मानी जाती है। कहते हैं शिवजी ने ही कुबेर को उत्तर दिशा का अधिपति बनाया था। उत्तर दिशा में फालतू सामान न रखें। कबाड़ा न इकठ्ठा होने दें।
- अगर आपको लगता है आपके घर में वास्तु दोष है जिसके कारण घर का मुखिया उन्नति नहीं कर पा रहा है तो घर के दरवाजे पर अन्दर की तरफ सात मुखी रुद्राक्ष टाँगे। सात मुखी रुद्राक्ष लक्ष्मी स्वरुप माना गया है। सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति होती है और धन की प्राप्ति होती है।

दीपावली के दिन सफेद रंग की प्रधानता

- सफेद रंग (चूना से) से घर लीपें पोतें सजायें
- सफेद पुष्प का उपयोग सजावट में करें
- सफेद वस्त्र और सफेद माला पहन कर माँ लक्ष्मी की पूजा करें "***सित वस्त्रोपशोभिना***"
- सफेद कमल / सफ़ेद सुगन्धित पुष्प माँ लक्ष्मी को अर्पित करें
- पशु आकृति की सफेद मिठाईयां माँ लक्ष्मी को अर्पित करें
- सफेद बताशे माँ लक्ष्मी को अर्पित करें
- सफेद खोए की घर पर बनी मिठाई माँ लक्ष्मी को अर्पित करें
- सफेद रोशनी करें

दीपावली पर भोजन कब करें

श्रावणी को रक्षाबन्धन, विजयादशमी को देवीपूजन, दीपावली को लक्ष्मीपूजन, होली को होलिका की ज्वाला देखने के बाद ही भोजन करना चाहिए। अर्थात इन कृत्यों से पूर्व भोजन नहीं करना चाहिए अपितु व्रत करना चाहिए। भविष्यपुराण ने बच्चों और रोगी को इस नियम से छूट दी है अर्थात बच्चे और रोगी लक्ष्मी पूजन से पूर्व भोजन कर सकते हैं

दिवा तत्र न भोक्तव्यमृते बालातुरान् जनान् । प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीपवृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।

कुछ विशेष उपाय

- हल्दी से रंगे हुए कपड़े (अगर स्वयं नहीं रंग सकते तो पीला सूती कपडा ले सकते हैं) के एक टुकड़े में एक मुट्ठी नाग केसर, एक मुट्ठी गेहूं, हल्दी की एक गांठ, तांबे का एक सिक्का, एक मुट्ठी साबुत नमक और तांबे की छोटी सी चरण पादुकाएं बांधकर रसोई घर में टांग दें। यह एक चमत्कारी उपाय है। इससे मां लक्ष्मी जी के साथ मां अन्नपूर्णा की भी कृपा प्राप्त होती है तथा पारिवारिक कलह भी दूर होता है।
- थोड़े से कच्चे सूत को शद्ध केसर से रंगते समय "महालक्ष्म्यै नम" मंत्र का जप करें। अब इस सूत को अपने व्यवसाय स्थल या दुकान के मुख्य द्वार पर ऊपर की ओर टांग दें। व्यवसाय में तरक्की होगी।

लक्ष्मी पंचायतन

ऐसी मान्यता है कि दीपावली के दिन लक्ष्मी पंचायतन ब्रह्माण्ड में प्रवेश करते हैं कुबेर, गजेन्द्र, इन्द्र, विष्णु, लक्ष्मी इस सुख-समृधि-संतुष्टि प्रदान करने वाले पंचायतन के सदस्य हैं।
https://essenceofastro.blogspot.com/2015/11/laxmi-panchaytan.html

दीवाली के दिन लक्ष्मी पूजन से पहले

- सुनिश्चित कर लें पूजन का सभी सामान एकत्रित हो चुका है तथा सजावट हो चुकी है।
- दीपावली के दिन नई झाड़ू खरीद (धनतेरस को भी ला सकते हैं) लाएं। पूजा से पहले उससे थोड़ी सी सफाई करें। फिर उसे एक तरफ रख दें। दीपावली की रात्रि उपरांत सूर्योदय के पूर्व घर की झाड़ू लगाकर घर के बाहर सारा कचरा डालकर के दरिद्रता को बाहर करें। यह कार्य अँधेरे में गुप्त रूप से करें। अगले दिन से उसका प्रयोग करें। द्ररिदता दूर भागेगी और लक्ष्मी का आगमन होगा।
- दीपावली के पूजन से पहले आप किसी भी गरीब सुहागिन स्त्री को अपनी पत्नी के द्वारा सुहाग सामग्री अवश्य दिलवायें, इससे मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। साम्रगी में इत्र अवश्य होना चाहिए।
- जो कोई दीपावली के दिन तुलसी का पूजन करता है उसे कभी धनभाव का सामना नहीं करना पड़ता है। अगर दीपावली रविवार को है तो तुलसी का बिना स्पर्श किये ही पूजन करें।
- जो व्यक्ति अपने घर में कमलगट्टे की माला, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति, दक्षिणावर्ती शंख, कुबेर पात्र, गोमती चक्र व श्रीयंत्र की स्थापना विधिवत पूजा के अनुसार करता है उसके घर में अचल लक्ष्मी सदैव निवास करती है। अतः सुनिश्चित कर लें आप यह सभी सामान ले आये हैं। सामग्री वास्तविक ही लें नकली न लें। ये सब दुर्लभ वस्तुयें हैं। आसानी से नहीं मिलेंगी। एकाक्षी नारियल किसी जानकार से लें आजकल ९९% नकली ही मिलते हैं। श्वेतार्क गणपति स्वयं अपने सामने रविपुष्य योग में बनवाएं। दक्षिणावर्ती शंख मिलना लगभग असंभव है जिसका मूल्य लाखों में होगा अतः अगर कहीं दिख जाए तो केवल दर्शन ही कर लें। श्रीयंत्र केवल वहीँ लें जो श्रीविद्या दीक्षा ले सकें।
- कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। अतः पहले ही इनकी व्यवस्था कर लें।

लक्ष्मीदेवी के दो विशेष मन्त्र

नमस्ते सर्व देवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिः त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।। निर्णय सिन्धु

ततश्चाविर्भूत साक्षात् श्रीःरमा भगवत् परा।
रंजयन्ति दिशः सर्वा विद्युत् सौदामिनी यथा।। भागवतमहापुराण

महालक्ष्मी पूजा से पहले इन्द्र ने क्या किया था?

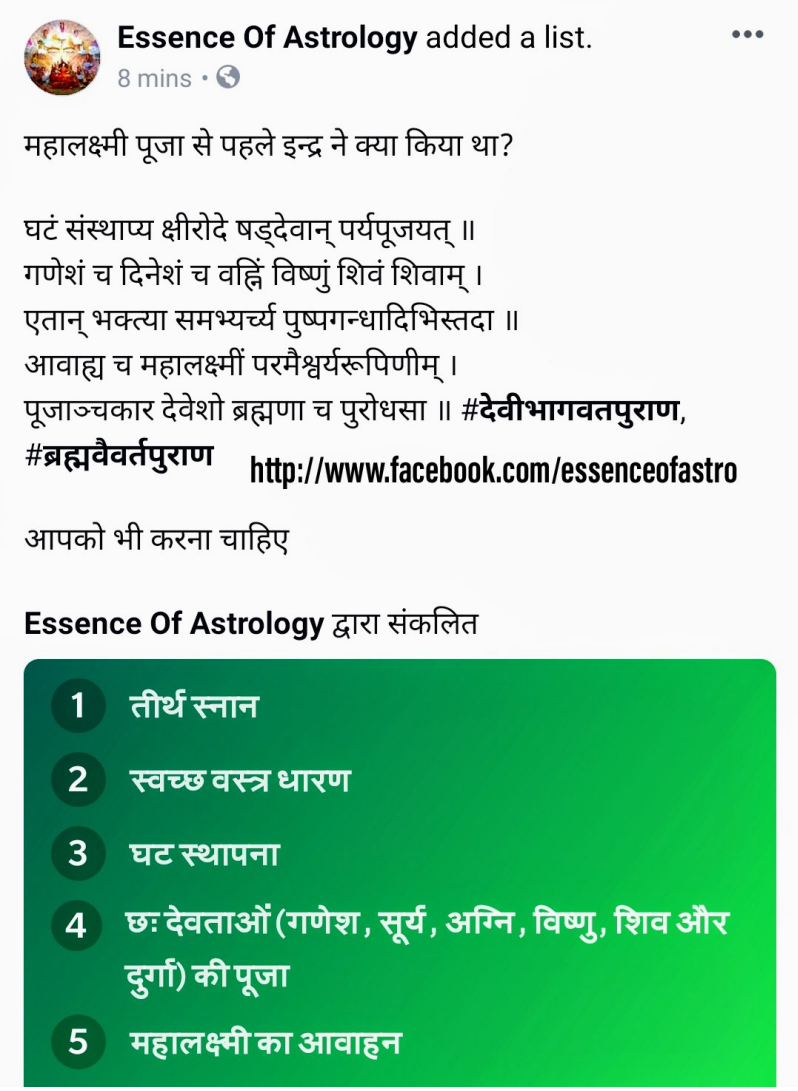
Essence Of Astrology added a list.
8 mins
महालक्ष्मी पूजा से पहले इन्द्र ने क्या किया था?
घटं संस्थाप्य क्षीरोदे षड्देवान् पर्यपूजयत् ॥
गणेशं च दिनेशं च वह्निं विष्णुं शिवं शिवाम् ।
एतान् भक्त्या समभ्यर्च्य पुष्पगन्धादिभिस्तदा ॥
आवाह्य च महालक्ष्मीं परमैश्वर्यरूपिणीम् ।
पूजाञ्चकार देवेशो ब्रह्मणा च पुरोधसा ॥ #देवीभागवतपुराण,
#ब्रह्मवैवर्तपुराण
http://www.facebook.com/essenceofastro
आपको भी करना चाहिए
Essence Of Astrology द्वारा संकलित
1 तीर्थ स्नान
2 स्वच्छ वस्त्र धारण
3 घट स्थापना
4 छः देवताओं (गणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, शिव और दुर्गा) की पूजा
5 महालक्ष्मी का आवाहन

आपको भी करना चाहिए

सामान्य गृहस्थ दीपावली पूजन कैसे करें

- लक्ष्मी का अर्थ है उत्तम लक्षणों में बसने वाली। देवी लक्ष्मी की पूजा करते समय देह को शुद्ध-पवित्र बनाकर, निर्मल वस्त्र, आभूषण और पुष्पमाला पहनकर शरीर पर चंदन का लेप लगाना चाहिए।
- अपने शरीर और घर को सुगन्धित रखें। सुगन्ध से लक्ष्मी जी को लगाव है। सुगन्ध से आयु बढ़ती है।
- "***गृहमध्ये उत्तराभिमुखो लक्ष्मीं पूजयेत्***" के अनुसार घर के मध्य में उत्तर की तरफ मुख करके लक्ष्मी पूजा करें।
- कलश में जल भर कर उसमे गंगाजल, थोड़े से चावल और सिक्का डाले। कलश को लक्ष्मीजी के पास

चौकी के दायीं तरफ चावल पर रखें। आम के ५ अथवा ७ पत्ते रखें। नारियल को लाल वस्त्र में इस प्रकार लपेटे कि नारियल का आगे का भाग दिखाई दे और इसे कलश पर रखें। कलश वरुणदेव का प्रतीक है।

- लाल, सफेद या पीले वस्त्र को पाट पर बिछाकर उस पर हल्दी से स्वस्तिक बना दें। अष्टदल कमल बनाएं। इस पर चावल व पुष्पदल बिछाकर लक्ष्मीजी की स्थापना करें।
- चौकी पर लक्ष्मी व गणेश की मूर्तियां इस प्रकार स्थापित करें की लक्ष्मीजी, गणेशजी के दाहिनी ओर रहें। भगवान विष्णु की मूर्ति लक्ष्मी माता के बायीं ओर रखकर पूजा करनी चाहिएं। लक्ष्मी विष्णुप्रिया हैं। दीपावली पूजन के समय गणेश - लक्ष्मी के साथ विष्णु जी की स्थापना अनिवार्य है।
- अब दो बड़े दीपक रखें। एक घी व दूसरे में तेल का दीपक लगाएं। एक शुद्ध घी दीपक चौकी के दाहिनी ओर रखें एवं दूसरा तेल (तिल का तेल) का मूर्तियों के चरणों में। इसके अतिरिक्त एक दीपक गणेशजी के पास रखें। दीपक का गंध अक्षत पुष्प से पूजन करें।
- आचमन करके गणेश पूजन से पूजा आरम्भ करें उसके बाद कलश में वरुणदेव का पूजन करें। गुरुदेव का ध्यान करें। भगवान् विष्णु, शिव, देवी का पूजन करें।
- लक्ष्मी पूजा हेतु '**हे लक्ष्मी, यहाँ आइये; यहाँ बिराजिये**' ऐसा कहकर माँ लक्ष्मी का आवाहन करें। तब उनको स्नान कराकर '**यह पाद्य स्वीकार करें ॐ लक्ष्म्यै नमः**' '**यह अनुलेपन स्वीकार करें ॐ लक्ष्म्यै नमः**' इस प्रकार पाद्य आदि और चन्दन चढ़ाएँ । फिर फूल लेकर प्रार्थना करें

नमस्ते सर्वदेवानां वरदाऽसि हरिप्रिये । या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ॥ १ ॥
विश्वरूपस्य भार्याऽसि पद्मे पद्मालये शुभे । महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं सुखरात्रिं कुरुष्व मे ॥ २ ॥
वर्षाकाले महाघोरे यन्मया दुष्कृतं कृतम् । सुखरात्रिः प्रभातेऽद्य तन्मेऽलक्ष्मीं व्यपोहतु ॥ ३ ॥
या रात्रिः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता । संवत्सरप्रिया या च सा ममास्तु सुमङ्गलम् ॥ ४ ॥
माता त्वं सर्वभूतानां देवानां सृष्टिसम्भवाम् । आख्याता भूतले देवि सुखरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥
दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके । नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि ॥ ६ ॥
शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभानने । मह्यमिष्टवरं देहि सर्विसिद्धिप्रदायिनि ॥ ७ ॥
नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि महासौख्यप्रदायिनि । सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानाय भुक्तिहेतवे ॥ ८ ॥
धनं धान्यं धरां हर्षं कीर्तिमायुर्यशः श्रियः । तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मि प्रयच्छ मे ॥ ९ ॥
यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु । न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटान्मे निवारय ॥ १० ॥
न्यूनं वाऽप्यतुलं वापि यन्मया मोहितं कृतम् । सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ११ ॥

यह पढ़कर तीन बार '**ॐ लक्ष्म्यै नमः**' इस मन्त्र से पूजा करें। तब विभिन्न उपचारों धूप दीप आदि से पूजा करें, मन्त्र, स्तोत्र आदि पढ़कर प्रार्थना करें और '**हे भगवती लक्ष्मी प्रसन्न होइये**' ऐसा कहकर क्षमापन करें (विसर्जन नहीं)। तब कुबेर की पूजा करें - '**भगवन् कुबेर, यहाँ आइये, यहाँ बिराजिये**" कहकर आवाहन करें, तब '**ॐ कुबेराय नमः**' इस मन्त्र से पाद्य, चन्दन आदि चढ़ावें । तब फूल लेकर प्रार्थना करें '**धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च । भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पदः**' यह कहकर '**ॐ कुबेराय नमः**' इस मन्त्र से तीन बार पूजा करें। धूप दीप आदि से फिर पूजा करें, वर- प्रार्थना करें। इसी प्रकार इन्द्र का आवाहन '**भगवन् इन्द्र, यहाँ आइये, यहाँ बिराजिये**' तथा '**ॐ इंद्राय न नमः**' से पाद्य और चन्दन चढ़ावें। प्रार्थना करें '**ऐरावतसमारुढो वज्रहस्तो महाबलः । शतयज्ञाधिपौ देवमस्तस्म इन्द्राय ते नमः**'

- पूजन के समय इत्र की शीशी माँ लक्ष्मी पर चढ़ायें उसमें से एक फुलेल लेकर उन्हें अर्पित करें । फिर

पूजन के बाद उसी फुलेल को स्वयं लगा लें। इसके बाद नित्य रोज इत्र लगाकर रोजगार घर जाये रोजगार के क्षेत्र में वृद्धि होगी।

- दीपावली पूजन के समय मां लक्ष्मी की एक पुरानी तस्वीर पर महिलाएं अपने हाथ से संपूर्ण सुहाग सामग्री अर्पित करें। अगले दिन स्नान के बाद पूजा करके उस सामग्री को मां लक्ष्मी का प्रसाद मानकर स्वयं प्रयोग करें तथा मां लक्ष्मी से अपने घर में स्थायी वास की प्रार्थना करें। इससे मां लक्ष्मी की कृपा सदा बनी रहती है।
- मां महाकाली तथा मां महासरस्वती की पूजा करें।
- खील, बताशे, आंवला, सुपारी, इलायची, कमलगट्टा, सिंगाड़े, सीताफल (शरीफा), अनार, सेव, ईख आदि अर्पण करते हुए मिष्ठान्न व विभिन्न व्यंजन का भोग लगाएं।
- धनतेरस वाले दिन लायी हुई चांदी की कटोरी में खीर से मां लक्ष्मी को भोग अर्पित करें और पूजा समाप्ति पर प्रसाद के रूप में उसी खीर का स्वयं सेवन करें तथा परिवार जन को खिलायें।
- अगर आपकी कुंडली में चंद्र - मंगल युति है तो पूजा में मां लक्ष्मी के चरणों में एक लाल तथा एक सफेद हकीक पत्थर रखें। पूजा के बाद इन्हें अपने पर्स में रख लें।
- लक्ष्मी पूजन करते समय 11 कौड़ियां गंगाजल से धोकर लक्ष्मी जी को चढ़ाएं और उन पर हल्दी कुमकुम लगाएं। अगले दिन इन्हें लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रख दें। इससे आय में वृद्धि होगी।
- पीले कपड़े में पांच लक्ष्मी (पीली) कौड़ी और थोड़ी सी केसर, चांदी के सिक्के के साथ बांधकर धन स्थान पर रखें।
- कनकधारा स्तोत्रं, श्री विष्णु सहस्त्रनाम, श्री लक्ष्मी सूक्त, श्री सूक्त, अष्टलक्ष्मी मंत्र का पाठ करें
- चाँदी की छोटी कटोरी या दिए में कपूर जलाएं ऐसा करने से दैहिक दैविक और भौतिक परेशानी/कष्टों से मुक्ति होती है।
- घी की बत्ती से आरती करें और अंत में क्षमा प्रार्थना करें उनका विसर्जन न करें।
- दीपावली में दीपमाला से लक्ष्मी की आरती करें (अनेक दीपक एक पंक्ति में आप आरती का बड़ा दीपक ले सकते हैं जिसमें 9 दीपक आपस में जुड़े हुए होते हैं) ***उद्-बुद्धां जगद्धात्रीं पूजयेद् दीपमालया। दीपैर्नीराजनादत्र सैषा दीपावली स्मृता। दीपमालापरिक्षिप्ते प्रदोषे तदनन्तरम्।।*** आजकल सोशल मीडिया पर कुछ लोग कहते हैं लक्ष्मी की आरती नहीं करनी चाहिए जो निराधार और अशास्त्रीय है। ऐसे लोगों से दूर रहे। आरती करने पर मन्त्रहीन और क्रियाहीन पूजन परिपूर्ण हो जाता है। ***मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं पूजनं मम। सर्वं संपूर्णतामेति कृते नीराजने सुत।।*** कलियुग में मन्त्र और वास्तविक क्रिया दोनों का ही लोप होता जा रहा है। अतः आरती करना अनिवार्य हो जाता है।

जिन लोगों को ज्यादा विधि विधान का ज्ञान नहीं हैं वो केवल नाम मंत्र से प्रदोष के समय लक्ष्मी, इन्द्र, कुबेर पूजन कर सकते हैं 'लक्ष्म्यै नमः', 'इंद्राय नमः', 'कुबेराय नमः'

निर्णयसिन्धु ने भविष्यपुराण के वचन से कहा है पहले लक्ष्मी पूजन करें उसके बाद दीपदान करें।
प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीपवृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।

दीपावली पर माँ लक्ष्मी के लिए भोग

- दीपावली श्री लक्ष्मी पूजन में देवी को पर बाजार के नैवैद्य की जगह घर पर ही बने लौंग, इलायची, दूध, मावा एवं शक्कर से बने नैवेद्य (मिठाई) का भोग लगाएं।
- धनतेरस वाले दिन लायी हुई चांदी की कटोरी में खीर से मां लक्ष्मी को भोग अर्पित करें और पूजा समाप्ति पर प्रसाद के रूप में उसी खीर का स्वयं सेवन करें तथा परिवार जन को खिलायें।
- लक्ष्मी माता का प्रिय फल होने के कारण ही नारियल को श्रीफल कहा गया है। माँ लक्ष्मी को नारियल का लड्डू, कच्चा नारियल एवं जल से भरा नारियल अर्पित करने वाले पर माता प्रसन्न होती हैं।
- मां लक्ष्मी को पानी में उगने वाला फल मखाना बहुत प्रिय है।
- सिंघारा (पानी में उगने वाला एक फल), अनार, शरीफा, गन्ना नाम के फल मां लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय हैं। केला तथा सेब का भी भोग लगाएं।
- बताशे माता को प्रिय हैं। यही कारण है कि दीपावली में बताशे और चीनी के खिलौने लक्ष्मी माता को अर्पित किए जाते हैं।
- माता को पान बहुत पसंद है। मधु यानी शहद से भरा पान खाने के बाद जब होंठों पर पान की लाली आ जाती है तो इसे देखकर देवी आनंदित होती है। इसलिए पूजा के बाद सबसे अंत में देवी को पान अवश्य अर्पित करना चाहिए। इस पान में चूना न लगा हो।
- आंवला, तुलसी, सुपारी, इलायची, कमलगट्टा माता रानी को जरूर अर्पित करें।

दीपदान / दीपक पूजन

मां लक्ष्मी कहती हैं: जब मिट्टी का दीपक पानी में भिगोया जाता है और उसमें से जो भीनी-भीनी, मन को मोह लेने वाली मिट्टी की सुगंध उठती है और उस दीपक में तिल, सरसों या अलसी जैसे पवित्र तेल डाले जाते हैं, और कपास से बनी बत्ती को श्रद्धा भाव से प्रज्वलित किया जाता है, तब उस क्षण का तेज और अद्वितीय सुगंध मुझे अतिशय प्रिय है। मुझे प्रतीत होता है कि उस दीपक के प्रकाश में जो पवित्रता, माधुर्य और दिव्यता झलकती है, वह स्वर्ग के रत्नों के प्रकाश में भी संभव नहीं है। अतः आप सभी अपने घर में मां लक्ष्मी के स्थाई निवास हेतु मिट्टी के दीपक ही जलायें।

- दीपों की अवलि (कतार) के कारण ही इसे दीपावली कहते हैं। प्रदोष में पूजन और दीप श्रृंखला का दान करना चाहिए "***प्रदोष समये राजन्!कर्तव्या दीपमालिका***" दीपों से आकृति का निर्माण करना चाहिए।
- अपनी सामर्थ्य के अनुसार घर के देवालय में अंदर अथवा बाहर दीपवृक्ष (दीपों से बनी वृक्ष की आकृति) का निर्माण करना चाहिए ***"प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीपवृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च"***
- दीपावली के दिन दीपकों की पूजा का विशेष महत्व हैं। कम से कम छब्बीस छोटे दीपक प्रज्जवलित करके जल, रोली, खील बताशे, चावल, गुड, अबीर, गुलाल, धूप, आदि से पूजन करें और टीका लगावें। पूजा करने के बाद दीपकों को घर में जगह-जगह पर रखें। ध्यान रहे पूरे दिन घर पर किसी भी कोने में अन्धकार न रहे।

- स्कंदपुराण के अनुसार किसी गोप ने कार्तिक अमावस्या में दीप जलाकर शारङ्गिण भगवान विष्णु की बार-बार जय जय बोलने के द्वारा राजेश्वर (सम्राट) पद को प्राप्त किया था।
  गोपः कश्चिदमावास्यां दीपं प्रज्वाल्य शार्ङ्गिणः।
  मुहुर्जयजयेत्युक्त्वा स च राजेश्वरोऽभवत्।।
- 1.5 किलो गेंहू की ठेडी पर घर के मध्य स्थान पर पूरी रात तिलतेल का दीपक जलने दें.
- घर के ईशान कोण में गाय के घी का दीपक लगाएं। बत्ती में रुई के स्थान पर लाल रंग के धागे का उपयोग करें साथ ही दीए में थोड़ी सी केसर भी डाल दें।
- घर के मुख्य दरवाजे के दायीं और बायीं ओर गेहूँ की छोटी छोटी ढेरी लगाकर उस पर दो तेल (तिल अथवा सरसों) के दीपक जला दें। हो सके तो वे रात भर जलते रहें, इससे आपके घर में सुख सम्पत्ति की वृद्धि होगी।
- गदाधर ने दीपावली के विवरण के क्रम में उल्लेख किया है कि पिता-पितामह-प्रपितामह, मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह इन छह पितरों का आवाहन कर दीपावली की रात्रि उनके नाम से दीप अर्पित करें।
- किसी बिल्व पत्र के पेड़ के नीचे दीपावली की शाम दीपक लगाएं। बिल्व पत्र भगवान शिव का प्रिय वृक्ष है। अत: यहां दीपक लगाने पर उनकी कृपा प्राप्त होती है। बिल्ववृक्ष को श्रीवृक्ष भी कहते हैं। इसपर पद्मा श्रीलक्ष्मी निवास करती हैं 'बिल्ब पत्रे स्थिता लक्ष्मी देवी लक्षण संयुक्ता ' (लिङ्ग पुराण)। समुद्र मंथन के समय जब महालक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ था उस समय विष्णु पत्नी बनने से पहले कुछ समय के लिए महालक्ष्मी ने बिल्ववृक्ष में विश्राम किया था। ऋग्वेदोक्त श्री सूक्त के अनुसार माँ लक्ष्मी के तपोबल से बिल्बपत्र उत्पन्न हुआ ,जो दरिद्रता को दूर करने वाला है । वामन पुराण के अनुसार “बिल्वो लक्ष्म्याः करेऽभवत्” लक्ष्मी के हाथ से विल्ववृक्ष की उत्पत्ति हुई है। यह न केवल बाहरी बल्कि भीतरी दरिद्रता को भी दूर करने में समर्थ है ।
- दीपावली के दिन अपने मुख्य द्वार पर सरसों का तेल का दीपक जलायें। फिर उसमें काली गुंजा के दो-चार दाने डाले दें इससे घर में सुख शान्ति आती है।
- निर्धनता दूर करने के लिए अपने पूजाघर मैं धनतेरस की शाम को अखंड दीपक जलना चाहिए जो दीपावली की रात तक जरूर जलता रह. अगर दीपक भैयादूज तक अखंड जलता रहे तो घर के सारे वास्तु दोष भी समाप्त हो जाते हैं.

दीपदान के पश्चात सोई हुई लक्ष्मी का हाथ में दीपक लेकर जगाना चाहिए। क्षीरसागर में भगवान विष्णु को सोया जानकर लक्ष्मी ब्राह्मणों से अभय प्राप्त करके कमल में रहने लगीं, उसी लक्ष्मी को आज स्त्रियां हाथ में दीपक लिये भगवान से पहले जगाती है। इस मंत्र का उच्चारण करें

त्वं ज्योतिः श्री रविश्चन्द्रो विद्यत्सौवर्ण तारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योति दींप ज्योतिः स्थिर्ते नमः।।
या लक्ष्मीर्दिवसे पुण्ये दीपावल्यां च भूतले।
गवां गोष्ठे तु कार्तिक्यां सा लक्ष्मीर्वरदा मम।।

अर्थात- हे दीप की ज्योति में स्थित (कमले) आप ही ज्योति रूप हैं। लक्ष्मी है, सूर्य चंद्र सुवर्ण समूह और तारे हैं। सब ज्योतियों की ज्योति आप ही है। आपको नमस्कार है। कार्तिक की दीपावली के पवित्र दिन को इस भूतल

पर और गौओं के गोष्ठ में जो लक्ष्मी शोभा पाती है, वे सदा मेरे लिए वरदायिनी हो।

जैसे नारी ब्रह्ममुहूर्त में पति से पहले जागती है वैसे ही लक्ष्मी भी अपने पति विष्णु से 11 दिन पहले जागती हैं।

कौमुदी महोत्सव

दीपावली के दिन में कौमुदी महोत्सव का उल्लेख भविष्यपुराण उत्तरपर्व में प्राप्त होता है। कौमुदी शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि **कु** अर्थात् पृथ्वी पर इस दिन सभी लोग **मुदित** अर्थात् प्रसन्न रहते है अत: इसे कौमुदी कहा गया है-

कुशब्देन मही ज्ञेया मुदा हर्षे ततः परम्। धातुज्ञैर्नैगमज्ञैश्च तेनैषा कौमुदी स्मृता।
कौ मोदन्ते जनाः यस्यां नानाभावैः परस्पराः। हृष्टास्तुष्टाः सुखायत्तास्तेनेषा कौमुदी स्मृता।

यहाँ कहा गया है कि इस दिन हमें प्रसन्न रहना चाहिए। इस दिन हमारी जैसी मानसिकता रहेगी वही स्थिति पूरे साल भर रहेगी-
यो यादृशेन भावेन तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर। हर्षदैन्यादिरूपेण तस्य वर्षं प्रयाति हि।।

अलक्ष्मी निष्कासन

ब्राह्म मुहूर्त में दरिद्रता देवी को घर से बाहर निकालना चाहिए। शूर्प(सूप)को पीटते हुए दरिद्रा को बाहर खदेड़ा जाता है ***"दरिद्रते! बाहर जावो, लक्ष्मी घर के भीतर आवो"***
विस्तृत विवरण: https://essenceofastro.blogspot.com/2017/10/alakshmi-nissaran.html

अन्य महत्वपूर्ण बातें

- भगवान वामन ओर राजा बलि का स्मरण करना चाहिए ऐसे करने से लक्ष्मी जी स्थायी रूप से आपके घर में निवास करती है ।
- सनत्कुमार संहिता के अनुसार लक्ष्मीजी समस्त देवी-देवताओं के साथ राजा बलि के यहाँ बंधक थीं। आज ही के दिन भगवान विष्णु ने उन सबको बंधनमुक्त किया था। बंधनमुक्त होते ही सब देवता लक्ष्मी जी के साथ जाकर क्षीर-सागर में सो गए थे। इसलिए अब हमें अपने-अपने घरों में उनके शयन का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि वे क्षीरसागर की ओर न जाकर स्वच्छ स्थान और कोमल शैय्या पाकर यहीं विश्राम करें। माँ लक्ष्मी कमल के पुष्प पर शयन करती हैं "**पद्मपुष्पतल्पविशायिनीम्**" अतः उनको कमल की शैय्या दें। डोरी और तूलिकाओं से पलंग बुनकर उन पर दूध के झाग के समान सफ़ेद मलमल का वस्त्र बिछाकर उस पर कमल की शैया दें।
- भविष्यपुराण का कथन है दीपोत्सव के अवसर पर जो राजा बली की पूजा करते हैं वे सभी प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। दान, उपभोग, सुख, समृद्धि आदि सैकड़ों वस्तुओं के लिए व्याकुल लोगों का सम्पूर्ण वर्ष हर्ष के साथ बीतता है।

लक्ष्मीप्रद श्रीगणपतिस्तोत्रम्

दीपावली से प्रारम्भ करके प्रतिदिन जीवन पर्यन्त पाठ करें

श्री गणेशाय नमः ।
ॐ नमो विघ्न-राजाय सर्व-सौख्य-प्रदायिने ।
दुष्टारिष्ट-विनाशाय पराय परमात्मने ॥ १॥
लम्बोदरं महावीर्यं नाग-यज्ञोप-शोभितम् ।
अर्धचन्द्र-धरं देवं विघ्न-व्यूह-विनाशनम् ॥ २॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः ।
सर्व-सिद्धि-प्रदोऽसि त्वं सिद्धि-बुद्धि-प्रदो भव ॥ ३॥
चिन्तितार्थ-प्रदस्त्वं हि सततं मोदक-प्रियः ।
सिन्दूरारुण-वस्त्रैश्च पूजितो वर-दायकः ॥ ४॥
इदं गणपति-स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः ।
तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति ॥ ५॥

इति श्रीगणपतिस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

श्रीस्तोत्रम् अग्निपुराणान्तर्गतम्

अग्निपुराण के अनुसार पूर्वकाल में इन्द्र ने राज्यलक्ष्मी की स्थिरता के लिए भगवती लक्ष्मी की स्तुति की थी। इस स्तोत्र का पाठ करने से भोग तथा मोक्ष मिलता है। मनुष्य को चाहिए सदा ही लक्ष्मी के इस स्तोत्र का पाठ और श्रवण करे। यह स्तोत्र विष्णु पुराण, प्रथम अंश, नवम अध्याय में भी वर्णित है जिसमें यह वर्णित है कि महालक्ष्मी ने इंद्र को वरदान दिया था कि जो मनुष्य प्रातःकाल तथा सांयकाल इस स्तोत्र का पाठ करता है, माँ लक्ष्मी उससे कभी विमुख नहीं होती।

पुष्कर उवाच

राज्यलक्ष्मीस्थिरत्वाय यथेन्द्रेण पुरा श्रियः । स्तुतिः कृता तथा राजा जयार्थं स्तुतिमाचरेत् ।।१।।

इन्द्र उवाच ।

नमस्ये सर्वलोकानां जननीमब्धिसम्भवां । श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थितां ।।२।।

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनि । सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्म्मेधा श्रद्धा सरस्वती ।।३

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने । आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ।।४।।

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च । सौम्या सौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैतद्देवि पूरितं ।।५।।

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः । अध्यास्ते देव देवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः ।।६।।

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयं । विनष्टप्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितं ।।७।।

दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यधनादिकं । भवत्येतन्महाभागो नित्यं त्वद्वीक्षणान् नृणां ।।८।।

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखं । देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्ल्लभं ।।९।।

त्वमम्बा सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता । त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरं ।।१०।।

मानं कोषं तथा कोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदं । मा शरीरं कलत्रञ्च त्यजेथाः सर्व्वपावनि ।।११।।

मा पुत्रान्मासुहृद्वर्गान्मा पशून्मा विभूषणं । मम देवस्य विष्णोर्वक्षःस्थलालये ।।१२।।

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः । त्यज्यन्ते ते नरा सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले ।।१३।।

त्वयावलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः । कुलैश्वर्य्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गणा अपि ।।१४।।

सश्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान्। स शूरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ।।१५

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः । परामुङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे ।।१६

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणान् जिह्वापि वेधसः । प्रसीद देवि पद्माक्षि नास्मांस्त्याक्षईः कदाचन ।।१७

पुष्कर उवाच ।

एवं स्तुता ददौ श्रीश्च वरमिन्द्राय चेप्सितं । सुस्थिरत्वं चराज्यस्य सङ्ग्रामविजयादिकं ।।१८।।

स्वस्तोत्रपाठश्रवणकर्तृणां भुक्तिमुक्तिदं । श्रीस्तोत्रं तस्मात् पठेच्च श्रृणुयान्नरः ।।१९।।

अगस्त्यकृत महालक्ष्मीस्तोत्रं

स्कन्दपुराण, काशीखण्ड की कथा के अनुसार अगस्त्यमुनि जब ब्रह्माजी और देवताओं के आग्रह पर विंध्य पर्वत के अभिमान को तोड़ने के लिए काशीपुरी से प्रस्थान करते हैं तो उनका मन बहुत विचलित होता है। विंध्य पर्वत के अभिमान को तोड़ने के पश्च्यात गोदावरी के तट पर विचरते हुए भी वो काशी-विरहजनित महान सन्ताप को न छोड़ सके। उस समय वे पत्नीसहित कोलापुरवासिनी महालक्ष्नी जी के समीप गये और उन्हें प्रणाम करके उनकी स्तुति की। यह स्तुति हमने आपके लिए संकलित की है।

अगस्तिरुवाच -

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमात:।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भ गौरि लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।
त्वं श्रीरुपेन्द्रसदने मदनैकमातर्ज्योत्स्नासि चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये।
सूर्ये प्रभासि च जगत्त्रितये प्रभासि लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।
त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्वेधास्त्वया जगदिदं विविधं विदध्यात्।
विश्वम्भरोऽपि बिभृयादखिलं भवत्या लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।
त्वत्त्यक्तमेतदमले हरते हरोऽपि त्वं पासि हंसि विदधासि परावरासि।
ईड्यो बभूव हरिरप्यमले त्वदाप्त्या लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।
शूर: स एव स गुणी स बुध: स धन्यो मान्य: स एव कुलशील कलाकलापै:।
एक: शुचि: स हि पुमान् सकलेऽपि लोके यत्रापतेत्तव शुभे करुणाकटाक्ष:।।
यस्मिन्वसे: क्षणमहो पुरुषे गजेऽश्वे स्त्रैणे तृणे सरसि देवकुले गृहेऽन्ने।
रत्ने पतत्रिणि पशौ शयने धरायां सश्रीकमेव सकले तदिहास्ति नान्यत्।।
त्वत्स्पृष्टमेव सकलं शुचितां लभेत त्वत्त्यक्तमेव सकलं त्वशुचीह लक्ष्मि।
त्वन्नाम यत्र च सुमंगलमेव तत्र श्रीविष्णुपत्नि कमले कमलालयेऽपि।।
लक्ष्मीं श्रियं च कमलां कमलालयां च पद्मां रमां नलिनयुग्मकरां च मां च।
क्षीरोदजाममृतकुम्भकरामिरां च विष्णुप्रियामिति सदा जपतां क्व दु:खम्।।

फलश्रुतिः

ये पठिष्यन्ति च स्तोत्रं त्वद्भक्त्या मत्कृतं सदा तेषां कदाचित् संतापो माऽस्तु माऽस्तु दरिद्रता।
माऽस्तु चेष्टवियोगश्च माऽस्तु सम्पत्तिसंक्षय: सर्वत्र विजयश्चाऽस्तु विच्छेदो माऽस्तु सन्तते:।।
एवमऽस्तु मुने सर्वं यत्त्वया परिभाषितम् एतत् स्तोत्रस्य पठनं मम सांनिध्यकारणम्।
अलक्ष्मीः कालकर्णी च तद्गेहे न विशेत्क्वचित् गजाश्वपशुशांत्यर्थमेतत्स्तोत्रं सदा जपेत्।।
बालग्रहाभिभूतानां वालानांशांतिकृत्परम् भूर्जपत्रे लिखित्वा तु बध्नीयात्कंठदेशत:।
इदं बीजरहस्यं मे रक्षणीयं प्रयत्नतः श्रद्धाहीने न दातव्यं न देयं चाशुचौ क्वचित्।।
।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डे अगस्तिकृता महालक्ष्मीस्तुति: सम्पूर्णा ।।

इन्द्ररचितम् श्रीलक्ष्मीस्तोत्रं ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गतम्

ब्रह्मवैवर्तपुराण, पृकृतिखण्ड में इन्द्र द्वारा रचित श्रीलक्ष्मी स्तोत्र वर्णित है। जब ब्रह्मा जी के आज्ञानुसार सोलह प्रकार के उपचारों से देवराज इन्द्र ने असंख्य गुणोंवाली उन भगवती महालक्ष्मी की पूजा की और उनके मूलमन्त्र का जप किया तब भगवती महालक्ष्मी ने इन्द्र को दर्शन दिये। शान्तस्वरूपा जगदम्बा भगवती महालक्ष्मी को देखकर देवराज इन्द्र उनकी स्तुति करने लगे। उस समय इन्द्र के सर्वांग में पुलकावली छा गयी थी। उनके नेत्र आनन्द के आँसुओं से पूर्ण थे और उनकी अञ्जलि बँधी थी। ब्रह्मा जी की कृपा से सम्पूर्ण अभीष्ट प्रदान करने वाला वैदिक स्तोत्रराज उन्हें स्मरण था। इसी को पढ़कर उन्होंने स्तुति आरम्भ की। यह स्तोत्र महान पवित्र है। इसका त्रिकाल पाठ करने वाला बड़भागी पुरुष कुबेर के समान राजाधिराज हो सकता है। पाँच लाख जप करने पर मनुष्यों के लिये यह स्तोत्र सिद्ध होता है। यदि इस सिद्ध स्तोत्र का कोई निरन्तर एक महीने पाठ करे तो वह महान सुखी एवं राजेन्द्र हो जाएगा– इसमें कोई संशय नहीं है। यह स्तोत्र देवीभागवतपुराण नवम स्कंध अध्याय 42 में भी वर्णित है

श्रीगणेशाय नमः ।

इन्द्र उवाच ऊँ नमो महालक्ष्म्यै ।।

ॐ नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः । कृष्णप्रियायै सारायै पद्मायै च नमो नमः ॥ १॥

पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः । पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः ॥ २॥

सर्वसम्पत्स्वरूपायै सर्वदात्र्यै नमो नमः । सुखदायै मोक्षदायै सिद्धिदायै नमो नमः ॥ ३॥

हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः । कृष्णवक्षःस्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः ॥ ४॥

कृष्णशोभास्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने । सम्पत्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः ॥ ५॥

शन्याधिष्ठादेव्यै च शस्यायै च नमो नमः । नमो बुद्धिस्वरूपायै बुद्धिदायै नमो नमः ॥ ६॥

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्लक्ष्मीः क्षीरोदसागरे । स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नपालये ॥ ७॥

गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता । सुरभि सा गवां माता दक्षिणा यज्ञकामनी ॥ ८॥

अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालये । स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता ॥ ९॥

त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा । शुद्धसत्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायाणा ॥ १०॥

क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा च शुभानना । परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा ॥ ११॥

यया विना जगत् सर्वे भस्मीभूतमसारकम् । जीवन्मृतं च विश्वं च शवतुल्यं यया विना ॥ १२॥

सर्वेषां च परा त्वं हि सर्वबान्धवरूपिणी । यया विना न सम्भाप्यो बाध्ववैर्बान्धवः सदा ॥ १३॥

त्वया हीनो बन्धुहीनस्वत्वया युक्तः सबान्धवः। धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी ॥१४

यथा माता स्तनन्धानां शिशूनां शैशवे सदा । तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपताः ॥ १५॥

मातृहीन स्नत्यक्तः स चेज्जीवति दैवतः । त्वया हीनो जनःकोऽपि न जीवत्येव निश्चितम् ॥१६

सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवाम्बिके । वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि ॥ १७॥

वयं यावत् त्वया हीना बन्धुहीनश्च भिक्षुकाः । सर्वसम्पद्विहीनाश्च तावदेव हरिप्रिये ॥ १८॥
राज्यं देहि श्रियं देहि बलं देहि सुरेश्वरि । कीर्तिं देहि धनं देहि यशो मह्यं च देहि वै ॥ १९॥
कामं देहि मतिं देहि भोगान देहि हरिप्रिये । ज्ञानं देहि च धर्मे च सर्वसौभाग्यमीप्सितम् ॥ २०॥
प्रभावां च प्रतापं च सर्वाधिकारमेव च । जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्यमैव च ॥ २१॥
इत्युक्त्वा च महेन्द्रश्च सर्वैः सुरगणैः सह । प्रणमाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः ॥ २२॥
ब्रह्मा च शङ्करश्चैव शेषो धर्मश्च केशवः । सर्वेचक्रुः परिहारं सुरार्थे च पुनः पुनः ॥ २३॥
देवेभ्यश्च वरं दत्वा पुष्पमालां मनोहराम् । केशवाय ददा लक्ष्मीः सन्तुष्टा सुरसंसदि ॥ २४॥
ययुदैवाश्च सन्तुष्टाः स्वं स्वं स्थानंच नारद । देवी ययोऐ हरेः क्रोडं दृष्टा क्षीरोदशायिनः॥२५
ययतुश्चैय स्वगृहं ब्रह्मेशानी च नारद । दत्वा शुभाशिषं तौ च देवेभ्यः प्रीतिपूर्वकम् ॥ २६॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्त्रः । कुबेरतुल्यः स भवेत् राजराजेश्वरो महान् ॥ २७॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेत् सोऽपि कल्पतरुर्नरः । पञ्चलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ॥ २८॥
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं च संयतः । महासुखी च राजेन्द्रो भविष्यति न संशयः ॥ २९॥
॥ इतिश्री इन्द्रकृतं लक्ष्मीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

Essence Of Astrology
http://essenceofastro.blogspot.com/
https://www.facebook.com/essenceofastro